विकार-दहन का पर्व होली

होली चैत्र प्रतिपदा से प्रारम्भ वर्ष के समापन दिवस का महापर्व है। यह बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। साथ ही यह जीवन को रंगो से परिपूर्ण और उल्लासपूर्ण बनाने का संदेश देता है। भारत में दिवाली, दशहरा, राखी और होली प्रमुख पर्व है। होली इस बार २६ मार्च को पड़ रही है। यह हिंदू पंचांग के चैत्र से शुरू होकर फाल्गुन पर समाप्त होने वाले मास में यह चैत्र प्रतिपदा से प्रारम्भ वर्ष के समापन दिवस का पर्व है। यह रंगों का त्यौहार है, जो यह सन्देश देता है कि वर्ष का समापन यदि रंगों और उल्लास के साथ हो, तो नए वर्ष का प्रारम्भ भी उल्लासमय होता है। होली पर हम अपने भेदभाव भूलकर एक हो जाते हैं यही इस महापर्व का सन्देश है। पुराणों में इसे हिरण्यकश्यप की बहन होलिका और प्रह्लाद की कथा से भी जोड़ा गया है। यह कथा अच्छाई की बुराई पर जीत का भी प्रतीक है।

होली, धुलेंडी और रंगपंचमी-फाल्गुन मास का पूर्णिमा को लकड़ी कंडो से परंपरागत होली सजाने का विधान है। इसका सायंकाल पूजन होता है और फिर उसे अग्नि को समर्पित कर दिया जाता है। यह एक तरह से यज्ञ का भी प्रतीक है, जिसमें हम अपने भीतरी विकारों को जलाते हैं।

- ब्र.कु. गंगाधर

अगले दिन धुलेंडी के रूप में रंग-गुलाल का उत्सव होता है। कई स्थानों पर पांचवें दिन पंचमी रंगों के साथ मनाई जाती है। ये सारे प्रतीक बसंत से झूंडे हैं, जिसका आगमन होली के कुछ समय पहले ही होता है। बसंत प्रकृति को कई रंग के फूलों से सजा देता है। प्रकृति के साथ हम भी रंगे और जीवन को भी उल्लासमय बनाएं। यही होली का धर्म और कर्म है। मूल यह है कि समाज की बुराईयां और हमारे विकार अवश्य नष्ट किए जाएं।

हमारे भारत में जितने भी त्योहार है उन सबके पीछे कोई न कोई पुराण कथा जुड़ी है। प्राचीन काल में समाज पर धर्म की बहुत ज्यादा पकड़ थी। अत: सामाजिक उत्सवों को धर्म के साथ पिरोया जाता था ताकि सभी लोग त्योहार में शामिल हो। होली की कहानी भी इससे अलग नहीं है, लेकिन यह उत्सव धर्म की ऊँचाई से गिरकर अब लोगों के लिए अपनी-अपनी भड़ास निकालने का जरिया हो गया है। अन्य सामाजिक उत्सवों की भांति इसमें भी दो तल हो गए हैं। एक होलिका दहन और दूसरा सामाजिक हुल्लड़बाजी, जो कि भीड़ की मानसिकता की उपज है वैसे होली भारत की गहरी प्रज्ञा से उपजा हुआ त्योहार है उसमें पुराण कथा तो एक आवरण है, जिसमें लपेटकर मनोविज्ञान की घुट्टी पिलाई गई है। इसकी जो कहानी है उसकी भी कई गहरी परतें हैं। हिरण्यकश्यप और प्रह्लाद कभी हुए या नहीं, इससे प्रयोजन नहीं है। लेकिन पुराणों में जो आस्तिक और नास्तिक का सघर्ष दिखाया है, वह रोज होता है। पल-पल होता है। होली की कहानी का प्रतीक देखें तो हिरण्यकश्यप पिता है। पिता बीज है, पुत्र उसी का अंकुर है। हिरण्यकश्यप जैसे दृष्टान्त को भी पता नहीं कि मेरे घर भक्त पैदा होगा, उसके प्राणों से आस्तिकता जन्मेंगी। इसका विरोधाभास देखें। इधर नास्तिकता के घर आस्तिकता प्रगट हुई और हिरण्यकश्यप घबड़ा गया। हर पिता पुत्र से लड़ता है। हर पुत्र पिता के खिलाफ बगावत करता है। और ऐसा पिता और पुत्र का ही सवाल नहीं है - हर 'आज' 'बीते कल' कल के खिलाफ बगावत है। वर्तमान पुत्र है। हिरण्यकश्यप मनुष्य के बाहर नहीं है, न ही प्रह्लाद बाहर है। ये दोनों प्रत्येक व्यक्ति के भीतर घटने वाली दो घटनाएं हैं। जब तक मन में संदेह है, हिरण्यकश्यप मौजूद है। तब तब तुम्हारे भीतर उठते श्रद्धा के अंकुरों को तुम पहाड़ों से गिराओगे, पत्थरों से दबाओगे, पानी में डुबोओगे, आग से जलाओगे लेकिन तुम जला न पाओगे।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

सदा खुशी की खुराक खाते रहो तो विजयी रत्न बन जाएंगे

बाबा ने हमको चुन-चुन करके लाखों, बारो डों आत्माओं में से अपना बनाया है। उसके लिए हम माला के मणके सिमरण योग्य बन रहे हैं। माला सिमरी जाती है। बाबा कहते हैं ज्ञान का सिमरण करते-करते तुम सिमरणी में आ जाते हो। बाबा कितनी अच्छी पढ़ाई पढ़ाते हैं। माला का इतना जो महत्व है उसका आधार पढ़ाई है। बाबा हमको विश्व की बादशाही देता है, हम बाबा को क्या देंगे? हमारा तो सब कुछ खलास हो चुका है। सफल किया तो हमारा भाग्य बना। जब यह समझ आयी है कि सब कुछ खलास होने वाला है तो सफल कर रहे हैं। सोलह हजार में आने वालों में भी इतनी तो बुद्धि है-विनाश के पहले सब कुछ सफल कर लें। 108 में न आने का कारण क्या है? सदा परंतु, परंतु, परंतु कहते रहते हैं। पढ़ाई भी पढ़ते हैं, पुरूषार्थ भी करते हैं, सब कुछ करते भी 'परंतु' आ जाता है। मात-पिता को फालो करने की इच्छा है, परंतु... । भूल से भी 'परंतु' कहना माना अपना नम्बर पीछे कर लेना। गफलत मत करो, मतभेद में नहीं आओ। गफलत यानी अलबेलापन, अलबेला बनते तो पढ़ाई का कदर नहीं रहता, मतभेद में आते तो पढ़ाई में रूचि नहीं रहती, धारणा करने का लगन कम हो जाती है, ध्यान और बातों में चला जाता है। विजयी माला में आना है तो अपने पर पूरा ध्यान रखना है। खाना खाते समय ध्यान रहे कौन खिला रहा है। विजय माला में आने वाले सच्ची दिल से साहब को अपना बनाकर रखते हैं। साहब जिसमें राजी हो उसमें ही बुद्धि चलेगी। और किसी भी बात में बुद्धि नहीं चलेगी। मात-पिता को फालो करने के लिए सिर्फ आज्ञाकारी रहना है। आज्ञाकारी रहना कोई कठिन नहीं है। आज्ञाकारी रहने से मार्ग सहज हो जाता है, विजयी बन जाते हैं। आज्ञाकारी रहने में अच्छा लगता है। आज्ञा मिली माना आशीर्वाद मिली, शक्ति मिली। आशीर्वाद बाबा करता नहीं है लेकिन आज्ञाकारी बनेंगे तो आशीर्वाद स्वत: मिलेगी। सारा मदार पुरूषार्थ पर है। आज्ञाकारी बनने से बड़ी आशीर्वाद मिलती है। बाबा का हमारे पर अधिकार हो जाता है। माला में आना बड़ी बात नहीं है। जरा भी इधर-उधर के ख्यालातों में समय जाता है तो नम्बर कम हो जाता है।मधुबन स्वर्ग से भी प्यारा लगता है। यहाँ अच्छी स्टडी कर सकते हैं, सेवा भी अच्छी कर सकते हैं, सब कुछ अच्छा हो सकता है, सब कुछ अच्छा होते भी यह चिंतन हो कि हमें नम्बर पीछे नहीं जाना है। पूरा स्नेह के सूत्र में बंधकर रहना है। स्नेह के सूत्र में एक्यूरेट बंधना है। और बातों पर ध्यान न हो, नम्बर अच्छा आये। किसी से रीस नहीं करनी है। रीस करने से नम्बर अच्छा नहीं होगा। गुप्त सच्चा पुरूषार्थ करते-करते नम्बर अच्छा हो ही जाता है। आठ में आने वाले आदि से लेकर बीच में कहाँ भी रूके नहीं हैं। हार-जीत के खेल में नीचे ऊपर नहीं हुए हैं, उनका विजय जन्मसिद्ध अधिकार रहा है। बाबा हम बच्चों को जिस दृष्टि से देखता है हमें उसी स्वमान में रहना है। बाबा हमारे से क्या चाहता है वह भूलना नहीं है। पढ़ाई पर ध्यान माना पढ़ाने वाले की दृष्टि हमारे ऊपर हो और कुछ कान में आवाज पड़ेगा तो सुखकारी नहीं होगा। बात बड़ी नहीं है, जैसा पुरूषार्थ करना चाहें हमारे हाथों में है। भगवान ने पुरूषार्थ कराके हमारा हाथ अपने हाथ में ले लिया है। बाबा ने कहा-बच्चे, तुम्हारा भाग्य मेरे हाथों में है। एक भगवान के हाथ में हमारा भाग्य है, दूसरा हमारे हाथों में भी हमारा भाग्य है। जैसा करते हैं वैसा गुप्त भाग्य बनता जा रहा है। जमा होता जा रहा है। उसकी खुशी प्रत्यक्ष मिलती जा रही है। यदि खुशी नहीं है तो विजयी माला में नहीं आएंगे। जब बाबा की सेवा प्यार से, दिल से कर रहे हैं तो खुशी क्यों नहीं है? बाबा तो तुरंत खुशी देता है। लेकिन बुद्धि इधर-उधर है तो खुशी ले नहीं रहे हैं। बाबा छोड़ता नहीं है खुशी देता है। वो खुशी की खुराक हमको मजबूत बना रही है। बाबा से जो खुशी मिली वह कोई छीन नहीं सकता। खुशी की खुराक ही विजयी रत्नों में ले आती है। आदि से अंत तक किसी भी घड़ी बाप में या स्वयं में संशय नहीं आ सकता। भगवान मिला है तो सब कुछ अच्छा है। हमारी बुद्धि को कोई खींचे नहीं-यह भी बड़ा भाग्य है। इस आधार पर भी माला में नम्बर अच्छा ले सकते हैं।

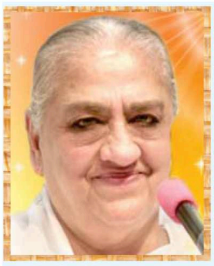

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

ज्ञान का मनन करते हुए स्वदर्शन चक्रधारी बनो

कई हैं जिनको योग में बैठने के समय खुशी नहीं होती, योग में बैठते हैं अच्छा लगता है, अशरीरी बनते हैं, संकल्प-विकल्प खत्म होते हैं, शांति का अनुभव होता है लेकिन खुशी नहीं होती। क्योंकि सिर्फ यह समझकर बैठ जाते हैं कि मैं निराकार आत्मा हूं, लेकिन निराकार आत्मा होते भी मैं कौन-सी आत्मा हूं? पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा हूं, डायरेक्ट बाबा से पैदा हुई ब्राह्मण आत्मा हूं, यह नशा भी रखो, यह खुशी की प्वाईंट भी रखो। सिर्फ निराकार आत्मा समझेंगे तो थक जाएंगे, नींद में चले जाएंगे, मजा नहीं आएगा। आपको दो घण्टा योग में बैठने के लिए कहेंगे तो कुछ समय तो निराकार होकर बैठेंगे फिर नींद में चले जाएंगे, खुशी नहीं होगी। जहां खुशी होती है वहां टाईम का पता नहीं होता है। अगर खुशी न हो, बिल्कुल सन्नाटा हो, नींद की स्टेज हो तो थकावट बहुत जल्दी आती है। कोई बात रमणीक हो रही हो, कल्चरल प्रोग्राम हो रहे हो उसमें दो घण्टे भी बैठेंगे तो पता नहीं पड़ेगा। और योग में बैठेंगे तो थकावट लगेगी। झुटके खाने शुरू हो जाएंगे। कारण क्या है? हमारा योग कोई सूखा योग नहीं है। निराकार हूँ, लेकिन निराकार की क्वालिफिकेशन बाबा ने जो भरी हैं वह भी याद रहे। तो मैं कौन सी आत्मा हूं? सिर्फ निराकार आत्मा हूं यह नहीं सोचो, लेकिन श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूं। ब्राह्मण माना ऊंची चोटी। कभी यह सोचो कि मैं आत्मा पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा हूं। मेरा भाग्य बनाने वाला डायरेक्ट भाग्यविधाता है। मैं भाग्यविधाता का बच्चा हूं। कभी यह सोचो कि मैं फरिश्ता सो देवता बनने वाली आत्मा हूं। तो कभी यह सोचो कि मैं विजय माला के मणके वाली आत्मा हूं। तो योग में कभी बोर नहीं होंगे। यदि एक घण्टा आप योग मैं बैठेंगे तो एक घण्टा बीज रूप नहीं हो सकते। स्टेजेज चेंज होती है। नीचे आ जाते हैं तो समझते हैं शायद मैं योगी आत्मा बनने वाली नहीं हूं। बीजरूप स्थिति में नहीं टिकते तो फरिश्ता रूप में रहो। बाबा ने एक बहुत अच्छी बात सुनाई थी कि योग में रहना है, भोगी नहीं बनना है, विस्मृति में नहीं आना है, स्मृति में रहना है। लेकिन बाबा ने योग की चार स्टेजेज की लकीर हमको खींचकर दे दी है, इससे बाहर नहीं जाना है। जैसे हमारे ब्राह्मण जीवन की जो चार धारणाएं हैं, पढ़ाई की चार सब्जेक्ट हैं, उसी अनुसार हमारी मर्यादाएं हैं। तो जैसे मर्यादा की लकीर हमारी बनी है। इसी तरह बुद्धि के लिए, योग के लिए भी मर्यादा की लकीर बनी हुई है। ऐसे नहीं बीजरूप स्थिति बनाने की मेहनत में ही पूरा समय चला जाए और युद्ध करते-करते ही सफेद लाईट हो जाए। फिर आप यही सोचते रहो कि आज तो योग लगा ही नहीं। यह तो ऐसा हो गया कि न माया मिली, न राम, दुविधा में टाईम चला गया। तो हमको ऐसा नहीं करना है। क्योंकि बीजरूप स्थिति में स्थित होने के लिए सारे दिन की दिनचर्या का कनेक्शन है, अगर सारे दिन की दिनचर्या शक्तिशाली नहीं होगी तो आप बीजरूप अवस्था में स्थित होने की कोशिश करेंगे तो भी नहीं हो सकते। जैसे समझो कोई बहुत कमजोर है, उसकी टांगे चल ही नहीं सकती, वह सोचे कि मैं चौथी मंजिल तक चढ़ जाऊं तो उसका क्या हाल होगा? जो थोड़ा बहुत चल सकता था वह भी बैठ जाएगा। इसी रीति से अगर मेरे सारे दिन की दिनचर्या शक्तिशाली नहीं है, योगयुक्त नहीं है और मैं अमृतवेले उठकर बीजरूप स्थिति की कोशिश करूंगी तो कभी नहीं होगी, युद्ध में ही टाईम चला जाएगा। यदि आपकी सारे दिन की दिनचर्या बहुत अच्छी रही है फिर आप अमृतवेले बीजरूप स्थिति की कोशिश करते हो लक्ष्य रखते हो तो हो जाएगी। लेकिन वो भी सारे टाईम नहीं होती है, स्थिति चेंज होती है। चेंज होकर फिर किस स्थिति में रहें उसके लिए बाबा ने हमको और भी तीन स्टेजज बता दी हैं। वह तीन स्टेजज कौन-सी है? पहला नम्बर है बीजरूप, दूसरा नम्बर है अव्यक्त फरिश्ता स्थिति, तीसरे नम्बर की स्थिति है ज्ञान का मनन। ज्ञान का मनन करते स्वदर्शन चक्रधारी बनो अर्थात् स्व को उस स्थिति में स्थित करो। मानो हम कहते हैं 'सतयुग' तो सतयुग की हमारी क्या स्टेज थी उस संस्कार को इमर्ज करो। आत्मा में रिकॉर्ड तो भरा हुआ है। देवता बनने का पार्ट हमने अनेक बार बजाया है, उसे स्मृति स्वरूप बन इमर्ज करो।